शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

विदेशी भाषा में भारतीयता की तलाश

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

भारत में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। जब आजादी आंदोलन का पुनरावलोकन करते हैं तो पाते हैं कि हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने चेतनाशून्य हो चुके समाज को जाग्रत करने के लिए भारतीय अस्मिता का मातृभाषा में गुणगान किया। हम जिस गौरवशाली स्वर्णिम अतीत को भूल चुके थे, उसकी ओर ध्यान आकृष्ट किया। जिस आध्यात्मिक चेतना को सिर्फ साधुओं और संन्यासियों के लिए अनिवार्य मानकर आमजनजीवन से बहिष्कृत कर दिया गया था, उसे समाज जीवन में दाखिल कराने के लिए महापराक्रम किया। आजादी के सिपाहियों ने संस्कृत भाषा में निबद्ध हमारी प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा को जनभाषा में व्यावहारिकता के धरातल पर स्थापित किया। आश्रम की अवधारणा को अरण्य से निकालकर नगरीय जीवन में दाखिल कर आजादी आंदोलन के रणक्षेत्र में रूपांतरित कर दिया। अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा में गांव से लेकर महानगरों तक अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह आदि एकादश व्रतों के मंत्र के उच्चारण से स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया। क्रांतिकारियों के मुख से मातृभाषा में जो मंत्र निःसृत हुए वे आज भी लोगों में शक्ति का संचार करते हैं। जैसे 'वंदे मातरम्' या 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और उसे मैं लेकर रहूंगा, या तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा, या 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' या 'करो या मरो' या फिर आजादी के बाद 'आराम हराम है' या 'जय जवान जय किसान' के मंत्रों ने लाखों लोगों को प्रेरणा दी। यदि यह सब विदेशी भाषा में होता, तो क्या वे शब्द आजादी और आधुनिक भारत के निर्माण के लिए प्रेरित कर सकते थे ? आजादी आंदोलन में जो प्रयोग अहिंसा के क्षेत्र में किए गए, जो नये शब्द गढ़े गये, पुराने शब्दों में जो नया अर्थ भरा गया, उनके पर्याय विदेशी भाषा में आज भी नहीं हैं, क्योंकि उन शब्दों का उद्भव और विकास भारत भूमि पर हुआ है। स्वतंत्रता आंदोलन में हमने आजादी की तलाश अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा में की, जिसके परिणामस्वरूप देश के लोगों ने भारत को अधिक से अधिक जाना और समझा। आजादी के पचहत्तर वर्ष बाद हम यह पाते हैं कि भारत को विदेशी भाषा में समझने और समझाने के लिए अनेक प्रबंधन गुरु, प्रेरक वक्ता और तमाम तरह के उद्यमी उठ खड़े हुए हैं। वे अपने ही लोगों के बीच विदेशी भाषा में भारत की गौरवमयी प्राचीन और आधुनिक उपलब्धियों का बखान कर न सिर्फ तालियां, बल्कि बाजार से कदमातल करते हुए मोटी राशि भी बटोर रहे हैं। यह आज के भारत की विडंबना है और इसे सभी ने वैश्विकरण के नाम पर स्वीकृति दे दी है। धन एकत्र करने की होड़ में शामिल धनाढ्य वर्ग को विदेशी भाषा में भारत की उपलब्धियों का भावनात्मक विश्लेषण रोमांचित तो करता है, परंतु उसे अपने देश से जुड़ने के लिए प्रेरित नहीं करता। इन पचहत्तर वर्षों में खास किस्म का

उच्च वर्ग पनप गया है, जो मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को हेय दृष्टि से देखता है। मातृभाषा और राष्ट्रभाषा से संबंध विच्छेद का परिणाम देश के नैतिक पतन में परिलक्षित हो रहा है। समाज जीवन में नैतिक मूल्यों का प्रवेश मातृभाषा के अलावा और कौन-सी भाषा में हो सकता है। संविधान लागू होने के 72 वर्षों बाद भी हम विदेशी भाषा में अपने देश को संचालित कर रहे हैं। अमृत महोत्सव वर्ष में देश को विदेशी भाषा से मुक्त करने के लिए **मातृभाषा और राष्ट्रभाषा** का महोच्चार करने की आवश्यकता है।

शब्दब्रह्म के शोधार्थियों को स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।